RESEARCH PAPER

RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary
e-ISSN: 2455-3085 | Vol.07 | No.01 | January 2022 | pp. 100-103
Double-Blind Peer Reviewed/Refereed Journal

Separation pain in Mahadevi's Poetry | महादेवी के काव्य में विरह वेदना

*Bhagavati Kumari Banshiwal

Research Scholar, Department of Hindi, University of Rajasthan, Jaipur

Abstract

Mahadevi's separation is present in all his poetry. Starting with pain, they are seen searching for their culmination in pain itself. Mahadevi ji's Vedanaubhuti is a spontaneous expression of the conceptual experience. The pain of his poetry has been considered more than the poetic pain of Meera. The life element of Mahadevi's poetry was her pain and suffering. She herself writes, 'Sorrow is such a poem of life near me that has the ability to bind the whole world in one thread. The main theme of his poetry is the eagerness to part with the beloved and find it. In her poetry, Mahadevi has presented the separation of soul and God in the form of Virhanubhuti.

Keywords: *Separation pain, separation, sattvikta, aliphatic, emotional*

Abstract in Hindi

महादेवी का विरह उनके समस्त काव्य में विद्यमान है। वे वेदना से प्रारंभ करके वेदना में ही अपनी परिणति खोजती दिखाई देती हैं। महादेवी जी की वेदनानूभूति संकल्पात्मक अनुभूति की सहज अभिव्यक्ति है। उनकी काव्य की पीड़ा को मीरा की काव्य पीड़ा से बढ़कर माना गया है। महादेवी के काव्य का प्राण तत्व उनकी वेदना और पीड़ा रहे। वे स्वयं लिखती हैं, 'दुःख मेरे निकट जीवन का ऐसा काव्य है जो सारे संसार को एक सूत्र में बांधने की क्षमता रखता है।'1 महादेवी की विरह वेदना में परम तत्व की अभिव्यक्ति दिखाई देती है। उनके काव्य का मुख्य प्रतिपाद्य प्रिय से बिछुडना और उसे खोजने की आतुरता है। महादेवी ने अपने काव्य में आत्मा और परमात्मा के वियोग को विरहानुभूति के रूप में प्रस्तुत किया है।

Keywords: *विरह वेदना, बिछोह, सात्विकता, स्निग्धता, भावोद्रक।*

Article Publication

Published Online: 20-Jan-2022

***Author's Correspondence**

Bhagavati Kumari Banshiwal

Research Scholar, Department of Hindi, University of Rajasthan, Jaipur

dr.hindi136[at]gmail.com

10.31305/rrijm.2022.v07.i01.012

© 2022 The Authors. Published by RESEARCH REVIEW International Journal of Multidisciplinary. This is an open access article under the CC BY-NC-ND license (https://creativecommons.org/licenses/by-nc-nd/4.0/)

विरह का अर्थ है, वियोग और वेदना का अर्थ है, मानसिक या मन की पीड़ा। इस प्रकार विरह वेदना का अर्थ हुआ वियोग से उत्पन्न मन की पीड़ा। हिन्दी काव्य में विरह भावना को अभिव्यक्त करने वाली कवयित्रियों में महादेवी जी का प्रमुख स्थान है। महादेवी के अपने काव्य में आत्मा और परमात्मा के बिछोह को विरह वेदना के रूप में अभिव्यक्त किया है। विरह के ताप को सहकर भी वे उससे उबरना नहीं चाहती है। वे नहीं चाहती कि उनकी पीड़ा कभी समाप्त हो, उनकी पीड़ा को कोई करूणा, सहानूभूति या सुख से भर दे। सम्पूर्ण साहित्य में उनकी पीड़ा की समानता करने वाला कोई नही है। उन्हें पीड़ा की रानी कहा जाता है। नंददुलारे वाजपेयी ने महादेवी की वेदना के बारे में लिखा कि, "प्रसाद के आंसू, निराला की स्मृति जैसी उद्वात और एक तान कल्पना तथा पल्लव का सा सौन्दर्योन्मेव महादेवी जी में नहीं है, किन्तु वेदना का विन्यास, उसकी वस्तुमता (Objectivity) का बहुरूप और विवरणपूर्ण चित्रण जितना महादेवी जी ने दिया है, उतना वे तीनों कवि नही दे सके हैं।"2

हिंदी के काव्य जगत में भक्तिकाल हिंदी का स्वर्णकाल माना जाता है। इस कालखंड में महान कृष्णभक्त कवयित्री मीराबाई विरह वेदना एवं करूणा का प्रतीकात्मक रूप थी। मीराबाई ने कृष्ण की अनन्य भक्ति करते हुए अपनी अध्यात्मिक अनुभूतियों को करूणा और वेदना के माध्यम से मार्मिक ढंग से प्रस्तुत किया है। इस कारण मीरा हिंदी साहित्य जगत में दर्द की दीवानी मानी जाती है। मीरा के साहित्य में जिस प्रकार हम वेदना और करूणा की मार्मिक अनुभूति देखते है, वही अनुभूति छायावाद की प्रसिद्ध कवयित्रि महादेवी वर्मा के काव्य में देखते है। सुमित्रानंदन पंत ने इसी करूणा को कविता के जन्म का मूल कारण बताते हुए लिखा है–

''वियोगी होगा पहला कवि,
आह से उपजा होगा गान
उमड़कर आँखों से चुपचाप

बही होगी कविता अनजान।''

कवि सुमित्रानंदन पंत ने जो वियोग की वेदना पहले कवि में देखी है उसे हम महादेवी वर्मा के संपूर्ण काव्य में देखते हैं। इसी कारण महादेवी वर्मा को आधुनिक मीरा भी कहा जाता है। महादेवी वर्मा हिंदी की प्रसिद्ध प्रतिभावान कवयित्रियों में से एक हैं। उनका जन्म 26 मार्च 1907 को होली के दिन फारूखाबाद उत्तर प्रदेश में हुआ था। हिंदी साहित्य के छायावाद काल के प्रमुख रचनाकारों में महादेवी अपना अलग स्थान रखती हैं। महादेवी न केवल प्रतिभाशाली कवयित्री थीं बल्कि एक अच्छी गद्य लेखिका और संगीत में भी सिद्धहस्त थीं। अपने काव्य में विरह भाव की अभिव्यक्ति के कारण उन्हें आधुनिक मीरा के नाम से भी जाना जाता है। इनके काव्य में वंदना की प्रधानता है। इनका हृदय अत्यंत करूणापूर्ण संवेदना युक्त एवं भावुक था जिसके कारण इनकी भाषा में लोकजीवन की जीवंतता का समावेश मिलता है। महादेवी ने स्वतंत्रता के पहले का भारत भी देखा और उसके बाद का भी। वे उन कवियों में से एक हैं जिन्होंने व्यापक समाज में काम करते हुए भारत के भीतर विद्यमान हाहाकार, रूदन को देखा परखा और करूण होकर अंधकार को दूर करने वाली दृष्टि देने की कोशिश की है। महादेवी के गीतों का अधिकारिक विषय 'प्रेम' है। पर प्रेम की सार्थकता उन्होंने मिलन के उल्लासपूर्ण क्षणों से अधिक विरह की पीड़ा में तलाश की। मिलन के चित्र उनके गीतों में संभावित, कल्पना से युक्त हो सकते हैं पर विरहानुभूति को भी उन्होंने सूक्ष्म, निगूढ़ प्रतीकों और धुंधले बिंबों के माध्यम से ही अधिक अंकित किया है।

महादेवी की प्रमुख काव्य रचनाएँ नीहार (1930), रश्मि (1932), नीरजा (1934), सांध्यगीत (1936), दीपशिखा (1942), सप्तपर्णा (अनूदित 1959), प्रथम आयाम (1974), यामा (1936), संधिनी (1965), अग्निरेखा (1990) आदि हैं। आधुनिक गीत काव्य में महादेवी जी का स्थान सर्वोपरी है। उनकी कविता में प्रेम की पीड़ा और भावों की तीव्रता वर्तमान होने के कारण भाव, भाषा और संगीत की जैसी त्रिवेणी उनके गीतों में प्रवाहित होती है वैसी अन्यत्र दुर्लभ है। वेदना और पीड़ा महादेवी जी की कविता के प्राण रहें। उनका समस्त काव्य वेदनामय है। उन्हें पीड़ावाद की कवयित्री कहा गया है। वे स्वयं खिती हैं दुःख मेरे निकट जीवन का ऐसा काव्य है, जिसमें सारे संसार को एक सूत्र में बाँध रखने की क्षमता है। इनकी कविताओं में सीमा के बंधन में पड़ी असीम चेतना का क्रंदन है। यह वेदना लौकिक वेदना से भिन्न आध्यात्मिक जगत की है, जो उसी के लिए सहज संवेद्य हो सकती है, जिसने उस अनुभूति क्षेत्र में प्रवेश किया है। महादेवी वैयक्तिक सुख को विश्व वेदना में घोलकर जीवन को सार्थक मानती हैं और वैयक्तिक दुख को विश्व सुख में घोलकर जीवन को अमरत्व प्रदान करना चाहती है। विरह का संगीत महादेवी जी की आत्मा को झंकृत कर देता है। वेदना इनके जीवन को प्रज्वलित करती है। साधारण व्यक्ति जीवन में सुख का साक्षत्कार करना चाहता है और दुखों का त्याग किंतु महादेवी के काव्य में उसके विपरीत स्थिति लक्षित होती है। जीवन की क्षणभंगुरता से त्रस्त महादेवी दुख के प्रति आकर्षित हैं। उनकी वेदना नीरस नहीं सरस है। वह वेदना संसार त्यागना नहीं चाहती।

महादेवी की वेदनानुभूति उनके हृदय और आत्मा का सौंदर्य है। महादेवी ने विरह का चरमोत्कर्ष अपने काव्य में अभिव्यक्त किया है। उनका दुख सुख की अतिशयता का ही परिणाम है। मनोवैज्ञानिक दृष्टि से यह उचित प्रतीत होता है कि, सुख से अधिक्य के कारण उन्होंने पीड़ा को आनंदमय मान लिया है। महादेवी जी जीवन भर आंसूओं की माला गूँथना ही नहीं चाहती अपितु सुख को आत्मसात करना चाहती है। उसे जीवन के एक कोने में बंद नहीं करना चाहती है। अतृप्त प्रेम की पीड़ा का मार्मिक चित्रांकन इनके काव्य में हुआ है। वे पीड़ा को ही अपना जीवन मानती है–

''पर शेष नहीं होगी यह मेरे प्राणों की क्रीड़ा
तुमको पीड़ा में ढूँढा तुममें ढूढूँगी पीड़ा।
दुख की भावना से जीवन में शक्ति आ जाती है
आत्मा का परिष्कार होता है
तू जल जल जितना होगा क्षय,
वह समीप आता छलनामय।''3

दुःख या पीड़ा एक ऐसी उत्कृष्ट अनुभूति है जो हमें सदा सचेत बनाएँ रखती है। इसलिए महादेवी के काव्य में यदि दुःख का प्राधान्य है तो कोई आश्चर्य की बात नहीं और फिर उन पर तो भगवान बुद्ध के दुःखवाद का बड़ा प्रभाव है, जिसे वे अपने शब्दों में स्वीकार कर चुकी हैं, ''बचपन से ही भगवान बुद्ध के प्रति एक भक्तिमय अनुराग होने के कारण उनके परिचय हो गया था।''4

कुछ विद्वान इनकी वेदना का कारण भौतिक मानते हैं तो कुछ विद्वान आध्यात्मिक। महादेवी के वेदना भाव में आध्यात्मिकता ही अधिक है। पीड़ा उन्हें सतत प्रिय है। उन्हें तो वेदना में जन्म, करूणा में मिला अवास तथा इस मीठी सी

पीड़ा में अनेक जीवन का प्याला डूबा है केवल आँसूओं की माला लिपटी सी उतराती है। उसका सर्वस्व छिपा है इन दीवानी चोटों में। उनकी दृष्टि में तो दर्द सहना प्रिय की प्राप्ति के लिए परमावश्यक है। वेदना महादेवी को इसिलए प्रिय है कि, इसमें व्यक्ति का अभिमान समाप्त हो जाता है। वेदना की ज्वाला में गलने पर ही मानव मन की निष्ठुरता दूर हो पाती है। इसलिए उन्होंने अपने जीवन दीपक को मधुर–मधुर जलने के लिए कह रही हैं–

''मधुर–मधुर मेरे दीपक जल।
युग–युग प्रतिदिन प्रतिक्षण प्रतिपल।
प्रियतम का पथ आलोकित कर।''5

महादेवी के अनुसार दुःख जीवन का ऐसा काव्य है जो समस्त विश्व को एक–सूत्र में बाँधने की क्षमता रखता है। उनका दुःख व्यष्टिपरख न होकर समष्टिपरक रहा है। उन्होंने कहा है व्यक्तिगत सुख विश्ववेदना में घुलकर जीवन को सार्थकता प्रदान करता है और व्यक्तिगत दुःख विश्व सुख में घुलकर जीवन को अमरत्व प्रदान करता है। दुःख–पीड़ा और विषद महादेवी के काव्य का मूल स्वर है और इन्हें सुख की अपेक्षा दुःख अधिक प्रिय है। परंतु इनमें विषाद का वह भाव नहीं है जो कर्म शक्ति को कुंठित कर देता हो। इनमें संयम और त्याग है तथा दूसरों का हित करने की प्रबल आकांक्षा है–

''मैं नीर भरी दुःख की बदली।
विस्तृत नभ का कोई कोना,
मेरा कभी न अपना होना,
परिचय इतना इतिहास यहीं,
उमड़ी कल थी मिट आज चली।''6

महादेवी की वेदना में व्याकुलता भी दिखाई देती है। मुरझाये फूल को देखकर वे व्याकुल हो उठती है। उन्हें जीवन एवं जगत दुःखमय तथा नश्वर प्रतीत होने लगता है। उनके हृदय में क्षोभ असमर्थता एवं विवशता के कारण व्याकुलता उत्पन्न हो जाती है। वहाँ भी बुद्ध के विश्व मंगल की कामना से उद्‌भूत दुःखवाद की ही प्रभाव परिलक्षित होता है। इसलिए अपने शब्दों में वे कहती है–

''जब न तेरी ही दिशा पर
दुःख हुआ संसार को
कौन रोयेगा सुमन
हमसे मनुज निःसार को।''7

महादेवी के काव्य में विरह के वेदना अत्यंत प्रवाहमान है इसलिए प्रियतम की स्मृति भी शाश्वत है। जीवन में सुख क्षणिक है। दुखों से आक्रांत मानव इस जीवन में दुख की अनुभूति निरंतर करता है। कुछ समय के लिए सुख की छाया भले ही मनुष्य के लिए आनंदमय हो। किंतु मुलतः जीवन दुखों का क्रम है। इस जीवन दर्शन को अपने काव्य में अभिव्यक्त करनेवाली महादेवी ने वेदना को ही हृदयगम कर लिया है।

महादेवी वेदना की पराकाष्ठा को मधुमय पीड़ा कहती है और अपने आराध्य को भी दुःख के अवगुंठन में छिपने के लिए कहती है, उनके प्रिय को भी नम के परदों में आना ही भाता है। महादेवी ने अपने जीवन में दुःख के महत्व को भली–भाँति समझ लिया है। उन्होंने यह भी मान लिया है कि, दुःख के द्वारा न केवल अपने जीवन को वरन मानवता को सुखी तथा समृद्ध बनाया जा सकता है। तभी तो वह कहती है–

''चिर ध्येय ही जलने का
ठंडी विभूति बन जाना
है पीड़ा की सीमा यह
दुःख का चिर सुख हो जाना।''8

महादेवी की वेदना को उसके सही परिप्रेक्ष में ही देखना चाहिए। उन्हें दुःखवाद का प्रचारक नहीं मानना चाहिए। महादेवी जी पार्थिव मिलन को महत्व न देकर सर्वत्र विरह और मिलन की आशा का उल्लेख करती है। उनके अनुसार वेदना, दुःखमूलक नहीं है, वह प्रिय है। इसलिए उसे उनके काव्य में इतना प्रधान पद मिला है और उनका काव्य दुःखवादी होते हुए भी एक अर्जीव गुंजन उत्पन्न करता हैं जिसका सुंदर उदाहरण उनका काव्य संग्रह 'यामा' में देखने को मिलता है–

''विरह का जलजात जीवन, विरह का जलजात।
वेदना में जन्म करूणा में मिला आवास,

अश्रु चुनता दिवस इसका, अश्रु गिनती रात।
जीवन विरह का जलजात।''9

इस प्रकार यह वेदना तत्व ही है जो महादेवी को यथार्थ जगत से जोड़ता है। वस्तुतः दुःख हमारे हृदय का प्रसार करता है वह संपूर्ण विश्व को हमारा आत्मीय बना देता है। वेदना का साहचर्य मानव हृदय को राग–द्वेष से मुक्ति दिलाता है। राग–द्वेष रहित हृदय कविता की जन्मभूमि है। यदि हृदय में जलती हुई वेदना ही समाप्त हो जाती है तो कवि उसका व्यापक प्रसार कैसे कर पाता।

निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि कवयित्री ने अपने काव्य में अपने निजी जीवन और जगत से उपलब्ध सुख–दुःख, हास्य–रूदन, हर्ष–शोक तथा आनंद और करूणा की अभिव्यक्ति की है। कवयित्री का हृदय सुख दुखात्मक अनुभूतियो से भरा है। जब ये अनुभूतियाँ विचलित और उद्वेलित करने लगती हैं तो हृदय से मनोभाव कविता के रूप में फूट पड़ते हैं। महादेवी जी ने भी अपने काव्य में विरह वेदना के रूप में अपनी अनुभूतियों की अभिव्यक्ति की। उनके काव्य में विरह वेदना और प्रेम की मूक पीड़ा अत्यन्त मार्मिकता के साथ व्यक्त की गई है। अपनी विरहानुभूति में कल्पना, करूणा, सात्विकता, भावोद्रेक, आशावादी दृष्टिकोण आदि सम्मिलित करते हुए महादेवी जी ने अपने काव्य को सुसज्जित किया है। उनकी विरह वेदना एक कवयित्री की वेदना है। उनका काव्य चिन्तन प्रधान है। उन्होने अपने काव्य द्वारा चिन्तन को नई दिशा प्रदान की। संपूर्ण भारतीय साहित्य में विरह वेदना को श्रेष्ठ रूप में प्रस्तुत करने के लिए महादेवी का स्मरण किया जाता है। यह कहना अतिशयोक्ति नहीं होगा कि जो अभिव्यक्ति महादेवी ने अपने काव्य के द्वारा की है उसमें कोई अन्य कवि उनके आस पास तक नहीं फटकता। छायावादी युग में एक मात्र ऐसी भाव–यौवना कवयित्री है जिन्होने नवीन विचारों को अपनी प्रखर बुद्धि की कसौटी पर कसा, खरे उतरने पर उन्हें प्राचीन भारतीय साहित्य के सांचे में ढालकर निर्भिकतापूर्वक अपनाया। वे वैयक्तिक सुख को विश्व वेदना में घोलकर अपने जीवन को सार्थक मानती है तथा वैयक्तिक दुःख को विश्व सुख में घोलकर जीवन को अमरत्व प्रदान करना चाहती है। उनकी विरहानुभूति को देखकर उन्हे आधुनिक काव्य की मीरा कहा जाता है।

संदर्भ–

महादेवी वर्मा, यामा की भूमिका, पृ. 3

डॉ. उपेन्द्र, छायावादी कवियों की गीत सृष्टि, पृ. 213

महादेवी वर्मा, नीहार, पृ. 38

महादेवी वर्मा, रश्मि (भूमिका) पृ. 5

महादेवी वर्मा, नीरजा, पृ. 59

निर्मला जैन, (सं.) महादेवी साहित्य (सांध्यगीत) पृ. 269

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल, हिंदी साहित्य का इतिहास, नागरी प्रचारिणी सभा, काशी, 1929, पृ. 719

डॉ. अरूणेंद्र सिंह राठौर, महादेवी वर्मा की काव्य चेतना, पृ. 117

महादेवी वर्मा, यामा, पृ. 92